विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर राजदूत श्री हर्ष कुमार जैन
द्वारा अलफराबी विश्वविद्यालय में दिया गया भाषण
(28 जनवरी 2015)

आदरणीय श्रीमती जुबातोबा, इस्काकोवा, दोसोवा, इस्मागुलोवा एंव बोकुलेवा जी,

अलफराबी विश्वविद्यालय के पूर्वी फैकल्टी और भारतीय और तुर्की विभाग के अन्य शिक्षकगण, विशिष्ट अतिथि, प्रिय मित्रों, छात्रों और छात्राओं ।

मुझे अत्यंत खुशी है कि आज अलफराबी विश्वविद्यालय के प्रांगण में विश्व हिन्दी दिवस मनाया जा रहा है । इस सुअवसर पर आप सबको मेरी शुभकामनाएं ।

आज हिंदी भारत में ही नहीं बल्कि विश्व भर में बोली और समझी जाने वाली विश्व भाषाओं में अपनी पहचान स्थापित कर चुकी है । विभिन्न अनुमानों के अनुसार हिन्दी विश्व में दूसरी, तीसरी या चौथी सबसे अधिक बोले जाने वाली भाषा है। 1998 मे आयोजित कामरी सर्वेक्षण के अनुसार हिन्दी भाषा चीनी भाषा के बाद विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है । लगभग 40 से 50 करोड़ जनसंख्या इसे प्रथम भाषा के रूप में प्रयोग करती है । हिंदी को जानने वालो की संख्या तो और भी अधिक है । केवल भारत में लगभग 80 करोड़ से ज्यादा लोग किसी न किसी रूप में हिंदी बोलते हैं और समझते हैं । इसका मूल कारण है कि यह देश की राजभाषा होने के साथ साथ भारत की सबसे बडी संर्पक भाषा भी है । भारत के अलावा इसे कई अन्य देशो में जहां भारतीय मूल के लोग बसे हैं, बोला और समझा जाता है ।

एक दिलचस्प बात है कि हिन्दी और विश्व की अनेक भाषाओं में काफी समानताएँ हैं । इसका मुख्य कारण है इसका संस्कृत उद्गम जिसने इंडो योरोपिएन परिवार की सभी भाषाओं को प्रभावित किया है । हिंदी भाषा के विकास में दक्षिण भारत और विश्व की

दूसरी भाषाओं का भी बहुत योगदान है । इसकी शब्दावली को तुर्की, फारसी, अरबी, अंग्रेजी, पुर्तगाली और दक्षिण भारत की द्रविड़ भाषाओं ने सर्मद्व बनाया है । हिंदी और कज़ाक भाषा में भी कई शब्दों की समानता है, जो हमारे नजदीकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सबंघों को दर्शाती है ।

हिन्दी भाषा बड़ी वैज्ञानिक भाषा है । हिन्दी भाषा में जैसा बोला जाता है वही लिखा जाता है और जैसा लिखा जाता है वही बोला जाता है । यह एक आकर्षक, अभिव्यंजक, सरल और सहज भाषा है । इसको गहन तर्क विर्तक में उपयोग के साथ साथ बहुत ही सुन्दर ढंग से काव्य और गीतों में भी पिरोया जा सकता है ।

हिन्दी भाषा का ज्ञान, भारत की अप्रतिम सांस्कृतिक धरोहर को समझने की आवश्यक कुंजी है । हिन्दी फिल्में और हिन्दी गाने दुनिया के कई हिस्सों में लोकप्रिय हैं । कज़ाकस्तान में भी कई बार यहां के देशवासियों को हिन्दी न जानते हुऐ भी हिन्दी गाने गुन–गुनाते सुना है । टेलीविजन पर दिखाऐ जाने वाले हिन्दी धारावाहिक भी कज़ाकस्तान सहित कई देशों में लोकप्रिय हैं । इसी लोकप्रियता के चलते आपको यह जानकर खुशी होगी कि विश्व के 90 से अधिक देशेां में हिन्दी पढ़ी और पढ़ाई जा रही है ।

हिंदी के बढ़ते हुए महत्व को देखते हुए 10 जनवरी 1975 को महात्मा **गाँधी** द्वारा संस्थापित अखिल भारतीय राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के तत्वावधान में नागपुर में प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया था । इस दिन को यादगार बनाने के लिए वर्ष 2006 से हर साल 10 जनवरी का दिन विश्व हिंदी दिवस के रूप में पूरे उत्साह के साथ मनाया जाता है ।

विश्व में हिन्दी भाषा के प्रचार प्रसार के लिए विश्व हिंदी सम्मेलनों का भी आयोजन किया जाता है । अभी तक विश्व के विभिन्न देशों में नौ सम्मेलन आयोजित किए जा चुके हैं । दसवां हिंदी सम्मेलन इस वर्ष भारत में आयोजित किया जाएगा । यह एक ऐसा मंच है,

जहां देश विदेश से बड़ी संख्या में हिन्दी के विद्ववान, साहित्यकार, पत्रकार तथा अन्य हिन्दी प्रेमी एकत्रित होते हैं । इसके अलावा करीब 18 क्षेत्रीय हिंदी सम्मेलन भी आयोजित किए जा चुके हैं।

मुझे अत्यंत खुशी है कि अलफराबी विशवविद्यालय में हिन्दी का अघ्ययन कई वर्षों से किया जा रहा है । यह गर्व की बात है कि यहां के कुछ विद्ववानों ने क्षेत्रीय हिन्दी सम्मेलनों में भाग लेकर अपना योगदान दिया है ।

विश्व हिंदी दिवस का आयोजन हिंदी ज्ञान के विस्तार और महत्व को समझने के लिए बहुत उपयोगी है । इस तरह के आयोजन हमारे बहुभाषी और बहूसांस्कृतिक समाज को समृद्वता प्रदान करते हैं ।

विभिन्न राष्ट्रों के लोगों को जोड़ने, उनको नज़दीक लाने में और उनकी संस्कृति और सभ्यता को समझने में भाषा एक सेतु का कार्य करती है । इसी को मद्दे नजर रखते हुए विदेशों में हिन्दी के अध्ययन के लिए भारत सरकार हिन्दी पाठ्य सामग्री और शिक्षण सहायता प्रदान कराती है । ऐसा समर्थन हम आपके विश्वविद्याालय को भी देने के लिए प्रतिबद्व हैं ।

अंत में, मैं अलफराबी विश्वविद्यालय के प्रशासन और शिक्षकगणों को विश्व हिंदी दिवस का यह समारोह आयोजित करने के लिए और आप सबको इस समारोह में भाग लेने के लिए हृदय से बधाई और धन्यवाद देता हूं और आशा करता हूं कि यह दिवस हर वर्ष इसी हर्ष उल्लास के साथ यहां मनाया जाएगा ।

धन्यवाद